# ग्रामीण विकास और पंचायतीराज

## (विशेष संदर्भ : उ०प्र०में फ़तेहपुर जिले का रसूलपुर ग्राम पंचायत)

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा के अन्तर्गत

एम.फिल. (अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग) उपाधि हेतु प्रस्तुत

**लघु शोध प्रबंध**

**सत्र- 2012-13**


**निर्देशक**

डॉ.डी०एन०प्रसाद

सहायक प्रोफेसर ,

(अहिंसा एवं शांति अध्ययनविभाग)

**शोधार्थी**

चितरंजन

एम.फिल. 2012 - 13

(अहिंसा एवं शांति अध्ययन)


**संस्कृति विद्यापीठ**

## महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्व विध्यालय)

पोस्ट –हिंदी विश्व विद्यालय,गाँधी हिल्स,वर्धा - 442005 ( महाराष्ट्र ) भारत


**अध्यायीकरण**

# ग्रामीण विकास और पंचायतीराज

## (विशेष संदर्भ उ०प्र०में फ़तेहपुर जिले का रसूलपुर ग्राम पंचायत)


❖ भूमिका पृष्ठ सं.- 1 - 9

❖ साहित्य का पुनरावलोकन

- शोध प्रविधि
- शोध का उद्देश्य
- क्षेत्र परिचय

प्रथम अध्याय : ग्रामीण विकास की अवधारणा पृष्ठ सं. - 25 - 48

- ग्रामीण विकास का उद्दभव एवं विकास
- ग्राम विकास का अर्थ एवं परिभाषाएँ
- ग्राम विकास का प्राचीन एवं आधुनिक परिवेश

द्वितीय अध्याय : ग्रामीण विकास में पंचायतीराज की भूमिका पृष्ठ सं ०- 49 - 78

- संविधान में ग्रामीण विकास के अधिकार
- ग्रामीण विकास में पंचायतीराज का योगदान
- ग्रामीण विकास में पंचवर्षीय योजनाओं के उद्देश्य

तृतीय अध्याय : रसूलपुर ग्राम पंचायत में विकास का पारिदृश्य पृष्ठ सं ०- 79 - 94

- रसूलपुर ग्राम पंचायत का भौगोलिक क्षेत्र
- रसूलपुर ग्राम पंचायत में सरकार द्वारा प्रदत्त संसाधनों का अध्ययन
- रसूलपुर ग्राम पंचायत में ग्राम प्रधान की कार्य प्रणाली का अध्ययन

चतुर्थ अध्याय: रसूलपुर ग्राम पंचायत का विश्लेषणात्मक अध्ययन एवंआकड़े मूलक अध्ययन

पृष्ठ सं ० - 95 - 1

पंचम अध्याय: उपसंहार

- ***संदर्भ ग्रंथ***
- ***परिशिष्ट***
- ***अन्य***

# भूमिका

भारत गाँवों का देश है और इसकी आत्मा गाँवों में निवास करती है। ये शब्द राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के थे। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भारत के ग्रामीण विकास हेतु अपना कितना योगदान दिया है। यह उनके जीवन काल का सर्वेक्षण करने पर हमें हर कदम पर मिलता है। भारत में पंचायतों का अस्तित्व अति प्राचीन है इस व्यवश्था का उद्भव कब हुआ इसका तात्कालिक स्वरूप क्या था इस विषय में कहना कठिन है परन्तु यह अनुमान अवश्य किया जा सकता है कि जब मानव समुदायों का उदय हुआ होगा लगभग उसी समय से पंचायत व्यवस्था का भी उदय हुआ होगा। पाँच व्यक्तियों की सभा एक अति प्राचीन संस्था है जिसका अस्तित्व अनेक राजनीतिक एवं आर्थिक परिवर्तनों के पश्चात भी बना रहा॥ प्राचीन भारत मे विद्यमान पंचायत व्यवस्था मध्य कालीन युग में भी अनवरत रूप से कार्य करती रही है। मुखिया। लेखागार। एवं चौकीदार जो पूर्व समय में पाये जाते थे इस काल में भी ग्रामीण शासन के अंग बने हुए हैं। ब्रिटिश कल में ग्रामों की स्वायत्तता तथा स्थानीय प्रसाशनिक संस्थाओं को आघात हुआ॥ इसका प्रमुख कारण अंग्रेज़ शासको के द्वारा पंचायतों को नाकर देना था | तथा स्थानीय स्वाशासन के संदर्भ में ब्रिटिश शासकों के द्वारा अनेक अधिनियम तथा आयोग निर्मित किए गए। जिसमें 1909 का रायल कमीशन, 1915 का भारत प्रस्ताव। 1918 की माटेगु चाइक्स्फ़ोर्ड रिपोर्ट 1918 का भारत प्रस्ताव प्रमुख रहा है। इसके उपरांत भारत सरकार अधिनियम 1919 में निर्मित हुआ किन्तु विभिन्न कारणों से स्थानीय स्वसासन के क्षेत्र में कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं हो सकी। 1935 में भारत सरकार अधिनियम के पारित होने के पश्चात प्रांतीय स्वायत्तता का सुभारम्भ हुआ इसके फलस्वरूप भारत में स्वतंत्रता की दिशा में एक शक्तिशाली पहल हुई जिसका स्थानीय संष्ठाओं पर एक सकारात्मक प्रभाव पड़ा तथा भारतीय साशन अधिनियम 1935 के अंतर्गत 1937 में लोकप्रिय मंत्रिमंडलों का निर्माण हुआ लेकिन दुर्भाग्यवश 1939 में द्वीतीय विश्व युद्ध के प्रारम्भ होने से स्थनीय संष्ठाओं को लोकप्रियता बनाने का कार्य अवरुद्य हो गया स्थानीय शासन के इतिहास में 1939 से 1946 तक की अवधि अंधकार का युग मानी जाती है क्योंकि अंग्रेज़ो के शासन द्वारा भारत में शासनों को तिरश्क्रत कर दिया गया था |

**साहित्य का पुनरावलोकन –** जैसा कि ग्रामीण विकास की अवधारणा भारत में पंचायतीराज के विकास से पहले की विपुल धरोहर रही है। यदि यह कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भारत की धरती के लिए ग्रामीण विकास में पंचायतीराज उन्मूलन योजनायें काफी उर्वरा शक्ति जैसी साबित हुई। पंचायतीराज के विभिन्न आयामों पर हाल ही में डॉ. धर्मवीर चन्देल। नत्थीलाल चतुर्वेदी की ''भारत में पंचायतीराज सिद्धांत व व्यवहार'' शीर्षक से पुस्तक प्रकाशित हुई है। जिसमें पंचायतीराज के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से लेकर वर्तमान समय तक के लेखा-जोखों का समावेश किया गया है। जिसमें उन्होंने लिखा है कि ग्रामीण विकास का उद्भव बीसवीं सदी में राष्ट्र पिता महात्मा गांधी जी ने अपने कर कमलों से किया था। जिसका उद्देश्य देहाती क्षेत्रों में रहनें वाले गरीब वर्गीय लोगों के स्तर को समाज में ऊपर उठाना तथा उनकी मूलभूत जरूरत जैसे आवास और जीवन यापन के लिए भूमि तथा विकास के लिए रोजगार। शिक्षा। संचार आदि संसाधनों को मुहैया कराना तथा ग्रामीण विकास को समाज में बड़े स्तर पर लाने के लिए सबसे पहले देवर्षि कलानाथ शास्त्री ने 'प्राचीन भारत में ग्राम स्वशासन: पंचायत व्यवस्था' में प्राचीन भारत की समाज व्यवस्था एवं पाश्चात्य और भारतीय विज्ञानियों के मतों

का उल्लेख किया। प्राचीन समय में निर्वाचन एवं उसके फलस्वरूप हुए बदलावों और वर्तमान समय में हुए बदलाव का विवेचन किया है।

डॉ.धर्मवीर चंदेल एवं नत्थीलाल चतुर्वेदी ने 'पंचायतीराज आधी सदी का सफर: एक सिंहावलोकन' के अंतर्गत 2 अक्टूबर। 1959 पंचायतीराज की नींव रखने से लेकर सन् 2009 में स्वर्ण जयंती मनाए जाने तक की विकास यात्रा का उल्लेख किया है। इसमें यह भी बताया गया है कि इस सफर में पंचायतीराज व्यवस्था कितनी सफल व कितनी असफल रही। पंचायतीराज के फैसले कुछ वर्ग विशेष के लोगों के लिए लाभकारी न होकर उन लोगों के लिए भी हो जो समाज के हाशिए पर खड़े होकर अपनी बारी का इंतजार कर रहे हैं।

**शोध प्रविधि –** मेरे इस शोध कार्य के दौरान जिस शोध प्राविधि का प्रयोग किया जाना है। वह प्राथमिक और द्वितीयक श्रोत होगें। मै अपने शोध में विभिन्न आयामों को दृष्टिपात करने की कोशिश करूंगा। मेरे शोध कार्य का विषय ग्रामीण विकास और पंचायतीराज विशेष संदर्भ: उत्तर प्रदेश राज्य में फतेहपुर जिला का रसूलपुर ग्राम पंचायत है जिसमें अनुसूची। साक्षात्कार। तथा सहभागी अवलोकन आदि के माध्यम से विषय की विभिन्न पहलुओं एवं समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

**शोध उद्देश्य –** मेरे शोध का उद्देश्य वर्तमान में उत्तर प्रदेश राज्य के फतेहपुर जिले में ग्रामीण विकास के विभिन्न कारणों का पता लगाना है। जिस ग्राम पंचायत रसूलपुर का मुझे अध्ययन करना है उस गाँव में कितना विकास हुआ है तथा भारत सरकार ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा पंचायत व्यवस्था में 'ग्रामीण विकास के लिए कितना अर्थ धन दिया है और कितना खर्च हुआ है। विकास के लिए गैर सरकारी संस्थाओं एवं इनके अधीन कार्य कर रही प्रमुख संस्थाओं का उल्लेख कर पंचायतीराज को इतिहास के कालखंड से जोड़ने का कार्य किया गया है। भारत का सर्वागीण विकास तभी संभव है जब ग्रामसभाएं होंगी।

## शोध के दौरानआने वाली समस्याएँ

- सही जानकारी देने से लोग हमेशा कतरातें हैं।
- निरक्षरता भी सर्वेक्षण में बाधक बनी है। क्योंकि प्रश्न पूछने पर लोग सही जवाब नहीं दे पाते थे।
- गाँव में सहयोग की भावना का आभाव देखने को मिला जो काफी दबंग प्रकती के लोग थे जो हमेशा अपनी चलाते हैं।
- ग्रामीण जनता में आत्मनिर्भरता का आभाव अभी भी देखा जा रहा है।
- आज भी गाँव में कई ऐसी महिलाएं हैं जो अपने पति या बड़े भाइयों का नाम लेने में सकुचाती है।
- गाँव के लोग अपना नाम गरीबी रेखा में आनें के लिए घर क सही जानकारी नहीं देना चाहते।

## क्षेत्र परिचय:उत्तर प्रदेश का परिचय क्षेत्र

उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा (जनसंख्या के आधार पर) राज्य है। करीब १९ करोड़ की जनसंख्या में जनसंख्या और क्षेत्रफल की दृष्टि के आधार पर उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा राज्य माना जाता है। इस प्रदेश की प्रशासनिक व विधायिक राजधानी लखनऊ है। और इलाहाबाद न्यायिक राजधानी है। व सबसे बड़ा महानगर

कानपुर इस राज्य में कुल 71 जिले हैं  इसी राज्य अंतर्गत फ़तेहपुर जिला आता है जिसमें रसूलपुर ग्राम पंचायत है जहाँ पर ग्रामीण विकास में योजनाओं का क्या महत्व हो रहा है इस राज्य के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव हैं यहाँ पर विधान सभा शीटें द्विसदनीय (404+108=512)एवं संसदीय निर्वाचन क्षेत्र 80 (वर्ष2004) और जनसंख्या 19। 95। 81। 477 (पहला) घनत्व 828 /कि.मी.² (2। 145 /वर्ग मी.) लिंगानुपात 908 / 1000 ♂/♀ और साक्षारता 69.72% जिसमें पुरुष 79.24%।  महिलाएं 59.26% की है। यहाँ की मुख्य भाषा हिन्दी। उर्दू है। और उत्तर प्रदेश राज्य में मौसम भी हमेशा लोगों के ही अनकूल रहता है। जैसे तापमान- 31 °C (88 °F)। ग्रीष्मकालीन 46 °C (115 °F)।  शीतकालीन 6 °C (43 °F)। एवं  निर्देशांक26°51′N 80°55′E / 26.85। 80.91 रिकर्ड किया गया था | और जिलों की संख्या- ७५है।  तथा तहसीलों की संख्या- ३१२तो विश्वविद्यालयों की संख्या-तीस है।

## उत्तर प्रदेश के प्रमुख महत्वपूर्ण प्रसाशनिक तथ्य –

- उत्तर प्रदेश की राजधानी – लखनऊ
- उत्तर प्रदेश का स्थापना दिवसनवम्बर १ -। १९५६
- सबसे बड़ा महानगर – कानपुर
- राज्यपाल- बनवारी लाल जोशी
- मुख्यमंत्री - अखिलेश यादव
- विधान सभा (सीटें)- द्विसदनीय )404 + 108 = 512)
- संसदीय निर्वाचन क्षेत्र- 80 (वर्ष 2004)
- उच्च न्यायालय- इलाहाबाद
- जनसंख्या घनत्व-19। 95। 81। 477 (पहला( 828 /कि) २.मी.2। 145 /वर्ग मी(.
- लिंगानुपात- महिला -908 / पुरुष- 1000
- कुल साक्षरता -79.24% -पुरुष = 69.72% महिला-59.26%
- आधिकारिक भाषाहिन्दी-। उर्दू
- क्षेत्रफल-2। 38। 566 किमी.$^2$ (92। 111 वर्ग मील(
- जनसंख्या1 । 86। 11। है। 265

## फतेहपुर जिले का परिचय

फतेहपुर जिला उत्तर प्रदेश राज्य का एक जिला है जो कि पवित्र गंगा एवं यमुना नदी के किनारों पर बसा हुआ है। फतेहपुर का उल्लेख पुराणों मे भी मिलता है। भिटौरा और असनि के घाट भी पुराणों मे मिलते है। भिटौरा भृगु ऋषि की तपोस्थली थी। फतेहपुर जिला इलाहाबाद मण्डल का एक हिस्सा है।

## फ़तेहपुर जिले का नक्शा

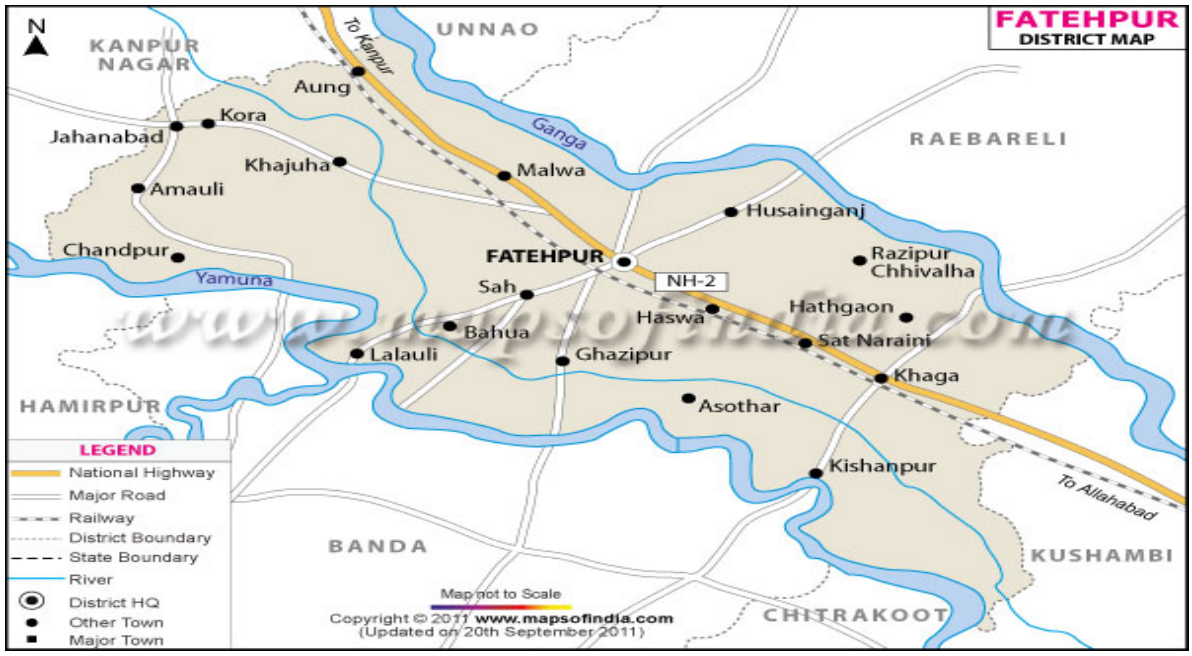


## फ़तेहपुर जिले के प्रमुख प्रसाशनिक तत्व

- ❖ जिला पंचायत अध्यक्ष जिला प्रशासक-
- ❖ नगर पालिका परिषद अध्यक्षचंद्रप्रकाश लोधी-
- ❖ जिलाधीशकंचन वर्मा-
- ❖ साक्षरता-44.6%%
- ❖ आधिकारिक भाषाहिन्दी-
- ❖ जनसंख्या 1। 96। 976

**फ़तेहपुर जिले की चौहद्दी –** पूरब की दिशा में : इलाहाबाद मण्डल। पश्चिम की दिशा में : कानपुर महानगर

उत्तर की दिशा में : गंगा नदी। दक्षिण की दिशा में : बाँदा जिला

## फ़तेहपुर जिले के ऐतिहासिक स्थल-

**बावनी इमली -** यह स्मारक स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा किये गये बलिदानों का प्रतीक है। 28 अप्रैल 1858 को ब्रिटिश सेना द्वारा बावन स्वतंत्रता सेनानियों को एक इमली के पेड़ पर फाँसी दी गयी थी। ये इमली का पेड़ अभी भी मौजूद है। लोगो का विश्वास है के उस पेड़ का विकास उस नरसंहार के बाद बंद हो गया है। यह जगह बिन्दकी उपखंड में खजुआ कस्बे के निकट है। बिन्दकी तहसील मुख्यालय से तीन किलोमीटर पश्चिम मुगल रोड स्थित शहीद स्मारक बावनी इमली स्वतंत्रता की जंग में अपना विशेष महत्व रखती है। शहीद स्थल में बूढ़े इमली के पेड़

में 28 अप्रैल 1858 को रसूलपुर गांव के निवासी जोधा सिंह अटैया को उनके इक्यावन क्रांतिकारियों के साथ फांसी पर लटका दिया गया था इन्हीं बावन शहीदों की स्मृति में इस वृक्ष को बावनी इमली कहा जाने लगा।

चार फरवरी 1858 को जोधा सिंह अटैया पर ब्रिगेडियर करथ्यू ने असफल आक्रमण किया। साहसी जोधा सिंह अटैया को सरकारी कार्यालय लूटने एवं जलाये जाने के कारण अंग्रेजों ने उन्हें डकैत घोषित कर दिया। जोधा सिंह ने 27अक्टूबर 1857 को महमूदपुर गांव में एक दरोगा व एक अंग्रेज सिपाही को घेरकरमार डाला था। सात दिसंबर 1857 को गंगापार रानीपुर पुलिस चौकी पर हमला करएक अंग्रेज परस्त को भी मार डाला। इसी क्रांतिकारी गुट ने 9 दिसंबर को जहानाबाद में गदर काटी और छापा मारकर ढंग से तहसीलदार को बंदी बना लिया।जोधा सिंह ने दरियाव सिंह और शिवदयाल सिंह के साथ गोरिल्ला युद्ध फतेहपुर जिला

शुरुआत की थी। जोधा सिंह को 28 अप्रैल 1858 को अपने इक्यावन साथियों के साथ लौट रहे थे तभी मुखबिर की सूचना पर कर्नल क्रिस्टाइल की सेना ने उन्हें सभी साथियों सहित बंदी बना लिया और सबको फांसी दे दी गयी। बर्बरता की चरम सीमा यह रही कि शवों को पेड़ से उतारा भी नहीं गया। कई दिनों तक यह शव इसी पेड़ पर झूलते रहे। चार जून की रात अपने सशस्त्र साथियों के साथ महराज सिंह बावनी इमली आये और शवों को उतारकर शिवराजपुर में इन नरकंकालों की अंत्येष्टि की।

**भिटौरा -** इस मुख्यालय पवित्र गंगा नदी के किनारे पर स्थित है। यहाँ सुप्रसिद्ध संत महर्षि भृगु लंबे समय तक पूजा का स्थान रहा है। यहा पर गंगा नदी प्रवाह उत्तर दिशा की ओर है| शहर मुख्यालय से उत्तर दिशा में बारह किलोमीटर दूर उत्तरवाहिनी भागीरथी के भिटौरा तट पर महर्षि भृगु मुनि ने तपस्या की थी । पौराणिक ग्रंथों के अनुसार भृगु मुनि की तपोस्थली में देवता भी परिक्रमा करने आए थे । पवित्र धाम गंगा महर्षि भृगु क्रोध में एक बार भगवान् विष्णु की छाती पर लात भी मारी थी । यहाँ पर अन्य आधा दर्जन मन्दिर बने हुए हैं ।

स्वामी विज्ञानानंद जी ने महर्षि भृगु की तपोस्थली में भगवान् शंकर की विशाल मूर्ति स्थापित कराई है । और नया पक्का घाट भी तैयार कराया है । भगवान् शंकर की मूर्ति पर ॐ नमः शिवाय का बारह वर्षों से अनवरत पाठ चल रहा है । उत्तर वाहिनी गंगा पूरे भारत में मात्र तीन जगह है जिसमे हरिद्वार । काशी व भृगु धाम भिटौरा है

**हथगाम -** यह महान स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय श्री गणेश शंकर विद्यार्थी ऐवम उर्दू के शायर श्री इकबाल वर्मा का जन्म स्थान है। इस् स्थान पर राजा जयचंद की हथशाला थी। और सिखों के पाँचवे गुरु अर्जुन देव जी की तपोस्थली होने का गौरव प्राप्त है।

**रेन्ह् -** यह महाभारत कालीन गाँव है और यमुना नदि के किनारे पर बसा हुआ है। दो दशकों पहले एक बहुत पुरानी भगवान विष्णु की कीमती मिश्र धातु की मूर्ति को इस इस गांव में पाया गया था। अब ये मूर्ति कीर्तिखेडा गांव में एक मंदिर मे स्थित है और ये गांव बिन्द्की ललौली सड़क पर है। कहा जाता है कि यहां पर क्रिष्ण के बडे भाई बलराम की ससुराल है।

**शिवराजपुर -** यह गांव बिन्दकी के निकट गंगा नदी के किनारे पर स्थित है। इस गांव में भगवान कृष्ण का एक बहुत पुराना मंदिर है। जो मीरा बाई का मंदिर के रूप में जाना जाता है। कहा जाता है कि ये भगवान कृष्ण की मूर्ति

को मीरा बाई जो की भगवान कृष्ण की एक प्रख्यात भक्त और मेवाड़ के शाही परिवार के एक सदस्य थी के द्वारा स्थापित किया गया था।

**तेन्दुली -** यह गांव चौड़्गरा-बिन्दकी सडक पर है। ऐसा मानना है कि यहाँ सांप के शिकार / कुत्ता काटे बीमरो का ईलाज बाबा झामदास के मन्दिर मे होता है।

**बिन्द्की -** यह बहुत ही पुराना शहर है जो कि मुख्यालय से लगभग १५ मील दूर है। बिन्दकी का नाम यहा के राजा वेनुकी के नाम पर पडा। यह बहुत ही धर्मनिरपेक्ष शहर है। यहा कि भूमि गन्गा और यमुना नदी के बीच मे होने के कारण बहुत ही उपजाऊ है। यह् उत्तर प्रदेश के राज्य में एक् एक सबसे पुराना तहसील है। शहीद जोधा सिंह अटैया और कई अन्य स्वतंत्रता सेनानियों और प्रसिद्ध हिंदी कवि राष्ट्र-कवि सोहन लाल द्विवेदी की मात्रभूमि है।

**खजुहा -** आदि काल मे खजुहा को खजुआ गढ के नाम से जाना जाता था। इस स्थान का मुगल काल मे बहुत ही महत्त्व था। औरन्गजेब के समय पर यह इलाहाबाद मण्डल की मुख्य छावनी थी। खजुहा को भगवान शिव की नगरी के तौर पर भी जाना जाता है। खजुहा मुगल रोड पर स्थित है। यह स्थान काफी प्राचीन है। इसका वर्णन प्राचीन हिन्दू धर्मग्रन्थ ब्रह्मा पुराण में भी हुआ है। जो कि 5000 वर्ष पुराना था। 5 जनवरी 1659 ई. में मुगल शासक औरगंजेब का अपने भाई शाहशुजा के साथ भीषण युद्ध हुआ था। औरंगजेब ने शाहशुजा को इस जगह के समीप ही मारा था। अपनी जीत की खुशी में उन्होंने यहां एक विशाल और खूबसूरत उद्यान और सराय का निर्माण करवाया था। इस उद्यान को बादशाही बाग के नाम से जाना जाता है। इसके अतिरिक्त इस सराय में 130 कमरें है। आज की स्थिति में यह अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है।

इस छोटे से शहर में 118 अद्भुत शिव मंदिर है| खजुहा कस्बा ऐतिहासिक घटनाओं और स्थानों को समेटे हुए है। कस्बे के मुगल रोड में विशालकाय फाटक और सरांय स्थित है। जो कस्बे की पहचान बना हुआ है। यहाँ पर साल में एक बार बहुत बड़ा मेला लगता है और खजुहा मेले में निर्मित होने वाले सभी स्वरूप नरई। पुआल आदि समान से बनाए जाते हैं। इन स्वरूपों के चेहरों की रंगाई का कार्य खजुहा के कुशल पेंटरों द्वारा किया जाता है। जबकि रावण का शीश तांबे से बनाया जाता है। दशमी के दिन से गणेश पूजन से शुरू होने वाली रामलीला परेवा द्वितीया के दिन राम रावण युद्ध के बाद इस ऐतिहासिक रामलीला की समाप्त हो जाती है। खजुहा की रामलीला का विशेष महत्व है। जहां रावण को जलाने के स्थान पर इस की पूजा की जाने की परंपरा है। तांबे के शीश वाले रावण के पुतले को हजारों दीपों की रोशनी प्रज्वलित करके सजाया जाता है। इसके बाद ठाकुर जी के पुजारी द्वारा श्रीराम के पहले रावण की पूजा की जाती है। जहां मेघनाथ का 25 फिट ऊंचा लकड़ी के पुतले की सवारी कस्बे के मुख्य मार्गों में निकाली जाती है। वहीं 40 फुट लंबा कुंभकरण व अन्य के पुतले तैयार किए जाते हैं।

**हजारी लाल का फाटक -** 1857 से शुरू हुई आजादी की जंग के अंतिम मुकाम 1942 में अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन का केन्द्र बिन्दु शहर के चौक स्थित हजारी लाल का फाटक था। बलिया के कर्नल भगवान सिंह ने जिले के आठ सौ से अधिक देशभक्तों की फौज की कमान संभाली थी। झंडा गीत के रचयिता श्याम लाल गुप्त पार्षद ने आजादी की इस चिंगारी को तेज करने का प्रयास किया। शिवराजपुर का जंगल क्रांतिकारियों की शरण स्थली था। बताते हैं कि यहीं पर गुप्त रणनीति तय होती थी और फिर अंग्रेजों के छक्के छुड़ाने के लिये क्रांतिकारियों के दल निकल पड़ते थे।

9 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत हुई थी। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में जिले की महती भूमिका होने पर 1942 की लड़ाई में पूर्वांचल के जनपदों सहित बांदा व हमीरपुर के क्रांतिकारियों ने जिले को ही रणभूमि के रूप में स्वीकारा तभी तो बलिया के कर्नल भगवान सिंह। चीतू पांडेय जैसे क्रांतिकारी यहां के देशभक्तों का साथ देकर अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई को तेज किया। जिले के क्रांतिकारी गुरुप्रसाद पांडेय। बंशगोपाल। शिवदयाल उपाध्याय। दादा दीप नारायण। शिवराज बली। देवीदयाल। रघुनंदन पांडेय। यदुनंदन प्रसाद। वासुदेव दीक्षित भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व कर जिले में एक माहौल पैदा कर दिया तभी तो एक-एक करके लगभग आठ सौ से अधिक की फौज क्रांतिकारियों के साथ अंग्रेजों की सत्ता को हिला दिया। चौक स्थित हजारीलाल का फाटक क्रांतिकारियों के लिये गुप्तगू का मुख्य केन्द्र था। बताते हैं कि यहीं पर कानपुर व पूर्वांचल के क्रांतिकारी नेता आकर अंग्रेजों को देश से भगाने के लिये क्या करना है इसकी रणनीति बताते थे।

अंग्रेजी शासकों को हजारी लाल फाटक की जानकारी हो गयी थी। कई बार यहां छापा मारकर क्रांतिकारियों को दबोचने के प्रयास किये गये। आखिर क्रांतिकारियों को गुप्त स्थान खोजना ही पड़ा। शिवराजपुर के जंगल में क्रांतिकारियों का मजमा लगता था। बताते हैं कि अस्सी हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में विस्तारित जंगल को ही क्रांतिकारियों ने अपना ठिकाना बनाया। भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत गोपालगंज के फसिहाबाद स्थल से की गयी। इसके अलावा खागा जीटी रोड को भी केन्द्र बिन्दु बनाया गया। जहानाबाद। हथगाम। खागा सहित दो दर्जन से अधिक स्थानों पर क्रांतिकारियों ने धरना-प्रदर्शन कर अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिये ललकारा। इस दरम्यान लगभग चार सौ लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। नेतृत्व करने वाले आधे से अधिक नेता जब जेल चले गये तो अंगनू पांडेय। बद्री जैसे क्रांतिकारियों ने मोर्चा संभाला।

## रसूलपुर ग्राम पंचायत काक्षेत्र परिचय

भारत की आज़ादी के बाद इस पंचायत का उदय हुआ इस पंचायत में शुरू से ही तीन गाँव रसूलपुर। सहनीपुर। और आसीनपुर आतें हैं | रसूलपुर ग्राम पंचायत के अंतर्गत इस बार सहनीपुर की महिला ग्राम प्रधान है यह प्रधान कक्षा 8 तक पढ़ी हुई है यह फतेहपुर शहर से 23/25 किलोंमिटर की दूरी पर है यहाँ पर आने जाने के लिए संम्पर्क मार्ग बना हुआ है पर यहाँ पर प्राइवेट साधन है! और लोग अपने साधन से आते जाते है इस ग्राम पंचायत में तीन गाँव आते है जिसमे सहनीपुर ग्राम पंचायत भी सम्मलित है ये सभी गाँव छोटे-छोटे है यहाँ सभी लोग साधारण तौर-तरीके से ही रहते है यहाँ के घर तो पक्के एवम् कच्चे बने है पर उनका रहन-सहन सहदरण ही है लगभग सभी के पास (गाय। भैंस। बकरी। बैल) आदि जानवर भी है| जिनसे कृषि का कार्य किया जाता है| इस पंचायत में पीने के लिए पानी की व्यवस्था अच्छी है जानवरों के लिए तालाब बने हुए है जिनमें गाँव के जानवर पानी पीते है एवं गाँव के बच्चे यहाँ पर नहाते भी है गर्मियों के मौसम में ये तालाब लोगों को काफ़ी राहत देते है|

**सहनीपुर -** सहनीपुर गाँव फतेहपुर से 23 कि0 मी0 की दूरी पर स्थित है और यहाँ के लोग भी साधारण तौर-तरीके से रहते है एवं अपनी दिनचर्या के अनुसार कार्य करते है इस गाँव में पर्याप्त खेती है जिस में गाँव के लोग खेती करते है और अपना भारण पोषण करते है गाँव के कुछ लोग बाहर जा कर नौकरी भी करते है|

**रसूलपुर-** यह गाँव सहनीपुर गाँव से लगभग 2 कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ एक छोटा सा गाँव है और यहाँ के लोग भी साधारण तौर-तरीके से रहते है एवं अपनी दिनचर्या के अनुसार कार्य करते है इस गाँव में पर्याप्त खेती है जिस में गाँव के लोग खेती करते है और अपना भारण पोषण करते है गाँव के कुछ लोग बाहर जा कर नौकरी भी करते है|

**आसीनपुर -** यह गाँव सहनीपुर ग्राम से 2 किलो मीटर की दूरी पर स्थित है और यहाँ के लोग भी साधारण तौर-तरीके से रहते है एवं अपनी दिनचर्या के अनुसार कार्य करते है इस गाँव में पर्याप्त खेती है जिस में गाँव के लोग खेती करते है और अपना भारण पोषण करते है गाँव के कुछ लोग बाहर जा कर नौकरी भी करते है|

**ग्राम पंचायत :** रसूलपुर । थाना : हुसेनगंज। ब्लॉक : भिटौरा। जिला : फतेहपुर (उ.प्र.)। पिन 212651

- रसूलपुर ग्राम पंचायत का क्षेत्रफल :5 वर्ग कि० मी० लगभग
- पंचायत की कुल जनसंख्या:4000 लगभग -पुरुष)50% महिला-30% बुजुर्ग-5% बच्चे-15%)
- जनसंख्या घनत्व :800 व्यक्ति लगभग ०मी०वर्ग कि /
- साक्षरता :75% लगभग

**संपर्क केंद्र -** पंचायत कार्यालय का नाम: सहनीपुर
कार्यालय का फ़ोन नं०: 9919410472
प्रधान / मुखिया / सरपंच का नाम: श्रीमती राजकुमारी पत्नी श्री विजय कुमार
संपर्क नं०: 9919410472
पोस्ट: भिटौरा ग्राम
थाना: हुसेंगंज
जिला: फतेहपुर
प्रदेश: उत्तर प्रदेश

# उपसंहार

भारत की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। इसलिए गाँवों की उन्नति और प्रगति पर ही भारत की प्रगति निर्भर है। गांधी जी ने ठीक ही कहा था कि यदि गाँव नष्ट होते हैं,तो भारत नष्ट हो जाएगा। भारत के शंविधान निर्माता भी इस तथ्य से भली-भाँति परिचित थे। अतःसंविधान निर्माण के समय हमारी स्वाधीनता को साकार करनें और उसे स्थायी बनाने के लिए ग्रामीण स्थानीय प्रशासन कि ओर प्रयाप्त ध्यान दिया गया। तथा संविधान के अध्याय चार में उल्लेखित नीति निर्देशक सिद्धांतों के अनुच्छेद 40 में कहा गया है कि राज्य ग्राम पंचायतों के निर्माण के लिए कदम उठाएगा और उन्हे इतनी शक्ति प्रदान करेगा जिससे कि वे स्वाशासनन कि इकाई के रूप में कार्य कर सकें ।भारत में पंचायतीराज  का इतिहास बहुत पुराना है प्राचीन काल में प्राचीन में पारस्परिक विवादों प्राचीन काल में पारस्परिक विवादों का निर्णय पंचायतें ही करतीं थीं लेकिन ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान पंचायतें धीरे-धीरे समाप्त हो गई तथा समस्त कार्य प्रांतीय सरकारें करने लगीं। लेकिन पंचायतों की बाग डोर को मजबूत बनाने के लिए सर्वप्रथम गाँधी जी ने पंचायत का नवीकरण किया जिसका केवल एक ही धेय था अंतिम जन तक लोगों का विकास हो सके। और भारतीय सरकार ने गाँधी जी की इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए संविधान में पंचवर्षीय योजना का सुभारंभ किया गया लेकिन यह योजना आज भी गाँव तक कम पहुँचती है,जिसका कारण पंचायतीराज व्यवस्था के पदासीन अधिकारी सामने आये हैं क्योंकि जिस प्रकार परिवार में बच्चों के विकास के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार होता है ठीक उसी प्रकार सम्पूर्ण गाँव के विकास में पंचायतीराज के सदश्यों की की भूमिका अहम होती है।

अत:उक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है की बहुत सी समस्याएँ एवं कमियाँ 73 वे संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा की गई है,किन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है। विधि एवं विधानों के निर्माण मात्र से व्यवस्था के कुशल एवं कारगर निष्पादन की गारंटी नही ली जा सकती है। आज इस तथ्य पर बाल दिया जाना आवश्यक है की क्या पंचयाती राज संस्थाएं सरकारी विभाग की एजेंसी मात्र है। अथवा स्थानीय क्षेत्र की एक पूरक संस्था ,साथ ही आरक्षण का प्रावधान कर देना मात्र ही पर्याप्त नहीं है अपितु आवश्यक यह है की इन आरक्षित स्थानों से समाज के कमजोर वर्गो का सक्षम नेत्रत्व उभर कर आयें एवं वह अपने कर्तव्यों का भय रहित होकर निर्वाहन करें इससे ग्रामीण विकास एवं ग्रामीण सामाजिक समरसता जैसे उदेशयों को प्राप्त करने में पंचायती राज संस्थाएं सफल हो सकेंगीं।

मेरे शोध का मुख्य उदेश्य था ग्रामीण समाज में आज के वर्तमान में पंचायतीराज योजनाओं का किस प्रकार निर्वहन सरकार के द्वारा किया जा रहा है और ग्राम पंचायतों के माध्यम से आज कितना विकास संभव हो पा रहा है इन सारी बातों की जानकारी केरनें के लिए मैंने जब उत्तर प्रदेश के फ़तेहपुर जिले के छोटे से ग्राम पंचायत रसूलपुर में जाके सर्वेक्षण किया तो पता चला की जितनी भी सरकार योजनाएँ चलायीं हैं उन योजनाओं का एक तिहाई का भाग ही ग्राम पंचायत लोगों के लिए निर्वहन करती है बाकी का सारा धन कहाँ जाता है, आज तक गांव के अशिक्षित लोगों को नहीं पता चल पाता और आसानी से ग्राम प्रधान गाँव की योजनाओं के पैसे को अपने कार्यों में या फिर बचे धन को अपने पास ही रख लेता है,जबकि गाँव के विकास के धन को गाँव में किसी अन्य कार्य में लाया जा सकता है।

मेरे द्वारा किए गए रसूलपुर ग्राम सर्वे के अनुसार आज जो भी ग्राम पंचायत अंतर्गत गांवों में कार्य किए गए हैं वह लोगों के हित में रखकर नहीं किया गया। गाँव में लोगों के जानकारी के अनुसार जब मैंने उनसे अपने शोध प्रबंधन के कार्य को ध्यान में रखते हुये कई प्रश्न पूछे तो गाँव में हो रहे पंचायत के द्वारा कार्यों में लोगों को असंतुस्ट ही किया गया गया है। पंचायत में चल रहे मनरेगा कार्य योजना में लोगों नेअपनी राय बताते हुये कहा है कि ग्राम प्रधान नरेगा का बहुत काम लोगों की बजाय टैक्टर से कार्य करवा लेते हैं जिससे हम लोगों को रोजगार गारंटी योजना का लाभ नहीं मिल पाता, जिससे लोगों की बेरोजगारी बनी रहती है।

अंततः गाँव में लोगों के द्वारा प्राप्त जानकारी और ग्राम सर्वेक्षण से उक्त शोध विश्लेषण में यह स्पष्ट हो पाया है कि आज जिस प्रकार रसूलपुर ग्राम पंचायत में ग्रामीण विकास योजनाओं के माध्यम से ग्राम प्रधान द्वारा वर्तमान में कार्य किए जा रहें हैं, उसमें ग्राम प्रधान का पद भ्रष्टाचार से बहुत घिरा हुआ है 2011-12 की जनगणना के अनुसार प्राप्त जानकारी में रसूलपुर ग्राम पंचायत के अंतर्गत (9,685) नौ हजार छःसौ पचासी लोग गाँव में रहतें हैं,और उनका जीवन सामाजिक और आर्थिक तथा राजनैतिक सभी प्रकार से स्वयं पर ही अंतरनिहित देखा गया है। अर्थात खुद से कमाना और परिवार चलाना जिसका कारण सरकार द्वारा योजनाएँ तो आती हैं पर उन योजनाओं का लाभ गाँव के सबसे गरीब लोगों तक नहीं पहुँच पाती। कारण ग्राम प्रधान की मनमानी हरकतें हैं। लोगों के अनुसार प्रधान अपनें सगे संबंधी लोगों को ही योजनाओं का सारा लाभ प्रदत्त करवाते हैं। इस कारण आज भी रसूलपुर ग्राम पंचायत अंतर्गत गाँव के लोग गरीब हैं। और जो लोग बहुत गरीब पर उनको गरीबी रेखा (बीपीएल), कार्ड नहीं बना जिससे आम गरीब लोग योजना का लाभ नहीं प्राप्त कर सकते हैं।

आज सराकर को अभी भी भारत में पंचायतीराज विभाग के अंतर्गत वरिष्ठ अधिकारियों और ग्रामीण विकास योजनाओं को ग्राम पंचायत के मुखिया को भी दिशा निर्देशित करनें की आवश्यकता है, जिससे आम गरीब लोगों को सही जानकारी व योजनाएँ उपलब्ध हो सकें। एवं साथ-साथ पंचायत के सभी ग्राम वासियों को सरकार से जो आशाएँ हैं वह बनी रह सकें। और आने वाले समय में सभी गाँव विकास कर सकें। जिसके लिए पंचायत को सबसे पहले अपनी ज़िम्मेदारी समझनी होगी। ताकि हर गाँव खुशाल बना रहे।

## रसूलपुर ग्राम पंचयात में ग्रामीण विकास की स्थितियों के संदर्भ में साक्षात्कार अनुसूची

परिवार के मुखिया का नाम.....पिता का नाम.....जाति .....धर्म.. ..... गाँव.....पंचायत.....ब्लॉक ..... थाना .....जिला …**.....**.....

**पारिवारिक स्थिति –**

| क्र. सं. | परिवार के सदस्यों का नाम | उम्र | लिंग | | व्यवसाय | विवाहित स्थिति | बच्चे | अन्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | स्त्री | पुरुष | | | | |
| 1- | | | | | | | | |
| 2- | | | | | | | | |
| 3- | | | | | | | | |
| 4- | | | | | | | | |
| 5- | | | | | | | | |
| 6- | | | | | | | | |
| 7- | | | | | | | | |

शैक्षिक स्थिति –

| प्राइमरी | माध्यमिक | उच्च शिक्षा | हाँ / नहीं। |
|---|---|---|---|
| | | | |

आवास की सुविधाएँ –

- क्या आपका अपना निजी मकान है हाँ ...../नहीं
- मकान के प्रकार आधाकच्चा खपरैल/आधापक्का/पक्का/कच्चा-
- घर में अन्यसुविधाएँगैस/बिजली- चूल्हा व अन्य ।/मोटरसाइकल/रेडियो/टीवी/कुंवा/हैंडपंप/सौचालय/
- क्या आपका नाम गरीबी रेखा में आता है और (बीपीएल) का कार्ड बना है - हाँ /नहीं
- आपके गाँव मे गरीबी रेखा में चयनित लोगों का चयन सही प्रकार से हुआ है ? हाँ नहीं। /

- आपके ग्राम पंचायत में गरीबी रेखा में चयनित लोगों का किस प्रकार चुना गया है ? सर्वे द्वारा आम/ सभा द्वारामनमाने ढंग से /
- क्या आपको ग्रामीण विकास की योजनाओं का कोई लाभ मिलता है ? हाँ / नहीं ।
- ग्राम पंचायत के अंतर्गत आपके घर में किसी को वृद्धा पेंशन मिलती है ? हाँ / नहीं।
- गाँव में पिछले पाँच वर्षों से किसी को इन्दिरा गांधी आवास योजना का लाभ मिला है ? हाँ / नहीं ।
- आपके गाँव मे किसी प्रकार के ग्रामीण विकास समूह या स्वयं सहायता समूह चलते है ? हाँ / नहीं ।
- आपको ग्रामीण विकास योजना के तहत किसी प्रकार का लाभ मिल रहा है ? हाँ / नहीं ।
- आपके गाँव में बच्चों को पढ़ने के लिए स्कूल है ? हाँ / नहीं ।
- क्या स्कूल मे आपके बच्चों के लिए सरकार द्वारा किताबें। भोजन। स्कूल ड्रेस निःशुल्क मिलती है ? हाँ / नहीं ।
- आपके गाँव में बच्चों की शिक्षा के लिए कितने तक स्कूल की व्यवस्था है ?5.8.10.12 कक्षा तक ।
- आपने कभी ग्रामीण विकास योजनाओं द्वारा किसी प्रकार का लाभ पाया है ? हाँ / नहीं ।
- ग्रामीण विकास में सबसे अधिक सार्थक कौन है ? ग्राम पंचायत / सरकार / संस्था / गाँव ।
- ग्राम पंचायत के मुखिया गाँव के विकास के प्रति सजग रहते हैं ? हाँ / नहीं ।
- ग्रामीण विकास में पॅचायती राज एवं ग्राम पंचायत में से कौन अधिक सार्थक है ? ग्राम पंचायत/ पॅचायती राज
- गाँव में ग्राम पंचायत के द्वारा कराए गए कार्यों से आप संतुस्ठ हैं ? हाँ / नहीं।
- गाँव में ग्राम पंचायत के मुखिया ग्रामीण विकास के लिए गाँव में किसी प्रकार की बैठक करते हैं? हाँ / नहीं।
- आपके गाँव में मनरेगा योजना द्वारा कार्य होता है ? हाँ / नहीं ।
- आपके घर में किसी का जॉब कार्ड बना है ? हाँ / नहीं।
- आपको साल में90 दिनों तक का रोजगार मिल पाता है ?हाँ नहीं ।/
- आपके गाँव में ग्राम पंचायत ग्रामीण विकास द्वारा क्या क्या विकास हुए हैं-? तालाब खुदाई /खड़ंजा/ (अन्य/नाली निर्माण

## ग्राम पंचायत में ग्रामीण विकास हेतु सुझाव एवं मन्तव्य -

- ग्रामीण विकास के कार्य में भ्रष्टाचार के लिए कौन जिम्मेदार है ?

ग्रामीण जनता/ ग्राम पंचायत के मुखिया/प्रखण्ड अधिकारी/अन्य।

- ग्रामीण विकास के कार्य में लाये जाने से पहले कितने प्रतिशत धन भ्रष्टाचार में चला जाता है।

25%। 35%। 50%। 75% |

- क्या ग्रामीण विकास में ग्राम पंचायत के मुखिया का पद भ्रष्टाचार से मुक्त है ? हाँ / नही।
- क्या आपके ग्राम पंचायत के मुखिया का चुनाव ग्रामीण विकास के लिए सही साबित हो रहा है ? हाँ / नही।

***एम.फिल. शोधार्थी***
***चितरंजन***
*एम.फिल. अहिंसा एवं शांति अध्ययन*
*मा.गाँ.अ.हि.वि.वर्धा। (महाराष्ट्र)*